P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-7* March- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नरेन्द्र शर्मा की 'द्रौपदी' : एक अवलोकन

पूनम काजल
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर
हिन्दी विभाग,
हिन्दू कन्या महाविद्यालय,
जींद, हरियाणा, भारत

सारांश

नरेन्द्र शर्मा का 'द्रौपदी' काव्य युग चेतना का उद्‌बोधक काव्य है जिसमें कवि ने द्रौपदी को नारी–शक्ति का प्रतीक मान कर उसकी ओजस्विता के माध्यम से समूची नारी जाति के महत्व को प्रतिष्ठित करने का स्तुत्य प्रयास किया है। रचना की भूमिका में कवि स्वयं लिखते हैं – "मैंने द्रौपदी को पाँच महा तत्वों को संश्लिष्ट और तेजोमय कर देने वाली जीवनीशक्ति के रूप में देखा है। द्रौपदी स्वयंवर के फलस्वरूप, जीवनी शक्ति द्रौपदी की प्राप्ति से पाँच पांडवों के रूप में पाँच महा तत्व अपना संश्लिष्ट स्वरूप प्राप्त करते हैं और प्राप्त करते हैं अपने लुप्त स्वत्वों को। द्रौपदी–स्वयंवर से पहले, जो क्षत्रिय हो कर भी ब्राह्मण–वेष में भिक्षाटन करते थे, द्रौपदी के संयोग से स्वधर्म और पैतृक राज्य को पुनः प्राप्त कर लेते हैं।"[1]

मुख्य शब्द : भिक्षाटन, संश्लिष्ट, तेजोमय, महीयसी, अग्निजा।

प्रस्तावना

नारी समाज का एक विशिष्ट एवं अभिन्न अंग है। सृष्टि के ऊषाकाल से ही नारी अपनी शक्ति, प्रेम, प्रेरणा, विश्वास और समर्पण के द्वारा समाज को परिचालित करती रही है। जीवन–संघर्ष में, सभ्यता की दौड़ में सदैव ही नारी ने पुरुष का साथ दे कर उसे विकास की ओर गतिशील किया है। विधि की विडम्बना है कि पुरुष में तेज का संचार करने वाली नारी पुरुष के द्वारा ही अपमानित होती रही है। 'यह कहना अत्युक्ति न होगी कि भारतीय समाज में नारी–वर्ग ही सर्वाधिक पीड़ित रहा है, अछूत वर्ग से भी अधिक।'[2] लेकिन यह भी सत्य है कि जब–जब पुरुष ने नारी का अपमान किया है, तब–तब भयंकर सर्वनाश हुआ है। इतिहास गवाह है कि रावण को सीता के हरण का बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा। द्रौपदी के अपमान के परिणामस्वरूप ही कौरवों का सर्वनाश हुआ।

अध्ययन का उद्देश्य

नरेन्द्र शर्मा ने अपने काव्य 'द्रौपदी' के माध्यम से वर्तमान युग की चेतना को उद्‌बोधित किया हैं स्वातन्त्र्योत्तर साहित्य में द्रौपदी जैसे पात्रों को प्राचीना नहीं, नवीना रूप में प्रस्तुत किया गया है। कवि ने नारी–शोषण, नारी–मनोविज्ञान, नारी–अस्मिता व नारी–जीवन से जुड़े अन्य बहुत से पहलुओं को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया है। इस सन्दर्भ में कवि स्वयं लिखते हैं – "द्रौपदी में मैंने भारतीय नारी के तेज–बल का गुणगान किया है। नारी की दहनशक्ति, सहनशक्ति और दहन–सहनशक्ति की ओर बार–बार संकेत किया है। यह भी कहा गया है कि नारी के त्याग के बिना धर्मराज की विजय सर्वथा असम्भव थी..... द्रौपदी के स्वरूप में मुझे चैतन्य लपट के दर्शन हुए। सिद्ध यह हुआ कि द्रौपदी जितनी प्राचीना है, उतनी ही नवीना भी। कहा जा सकता है कि द्रौपदी नारी–शक्ति का एक शाश्वत नित्य–नवीन निरन्तर प्रतीक है।"[3]

द्रौपदी चेतना की प्रतिमूर्ति है। उसने कुंती–पुत्रों के मन में जीवनी–शक्ति का संचार किया। सत्य तो यह है कि पांडवों की प्रेरणा बन द्रौपदी ने उन्हें उद्योगी नर का रूप देकर कर्म में प्रवृत्त किया। उसी की प्रेरणा से पांडव धर्म व न्याय के रक्षार्थ युद्धोन्मुख हुए और युद्ध रूपी सृष्टि यज्ञ में अन्याय व अधर्म की बलि चढ़ाकर धर्म और न्याय की स्थापना करने में सफल रहे। द्रौपदी प्राचीनकाल की महीयसी तेजस्वी नारी है। महाभारत कथा–समुद्र की सौभाग्य लक्ष्मी, जिसने अपनी प्रबल शक्ति और उद्योग से पांडवों को विजय के कीर्तिमान पथ पर प्रवृत्त किया है। "महिमा द्रौपदी की है कि युधिष्ठिर ने शक्ति प्रेरित उद्योग से शकुनि–प्रेरित अपने खोए हुए राजपाट को पुनः प्राप्त किया।"[4]

सत्य तो यह है कि द्रौपदी पुरुष द्वारा नारी पर किए जाने वाले अत्याचार के प्रति विद्रोही स्वर की अभिव्यक्ति है। एक ओर नारी अपने तप और त्याग से नर के जीवन की स्रष्टा है, वहीं विपरीत स्थितियों में वही काम्या नारी संहारक भी बन जाती है। मद व अहंकार से प्रेरित दुःशासन जुए में दाँव पर

लगी द्रौपदी को निर्वसन करने का निर्लज्जतापूर्ण कृत्य करता है। दुःशासन द्वारा किया गया यह अमानुषिक कृत्य ही कौरव कुल के विनाश का कारण बनता है। यह कटु सत्य है कि सदियों से शोषण की चक्की में पिसती हुई नारी कभी उपकरण मान ली जाती है, तो कभी भोग्या। आर्त्तनाद करती नारी के चीत्कार के स्वर को पुरुष अपने अहं से घोंट देता है।

वह चीत्कार करती रहती है–

"दुष्ट दुःशासन, करो मत अग्निजा को निर्वसन!
भूमिगत गंधक–नदी का हटाओ मत आवरण!
वह अयोनिज अनल धारे हुए है निज देह में,
लपट–पट छूकर करोगे याद उसको आमरण।"[5]

अपने अपमान से मर्महत हुई द्रौपदी कौरवों के विनाश का संकल्प लेती है। वह अपने व्यक्तित्व को विसर्जित न करके उसे एक नई दिशा, एक नया आयाम देने के लिए प्रयत्नशील रहती है। स्वयं को सामाजिक शोषण का शिकार जानकर नारी को अनेक कोटरों में बन्दी करने वाले पुरुषों के प्रति उसके हृदय में आक्रोश व्याप्त है। इसलिए वह रूढ़िगत सामाजिकता के विरुद्ध अपने अस्तित्व की रक्षा तथा मानवीय न्याय की प्राप्ति के लिए संघर्षरत होती है।

राजसभा में हुए अपने अपमान का प्रतिशोध उसे हर कीमत पर चाहिए–

"उठ रही थी यज्ञ–ज्वाला द्रौपदी के क्रोध की,
आ रही थी निकट हर क्षण भूमिका प्रतिशोध की।
पंच शोणित–सरोवर की भूमि का आह्वान था;
शक्ति थी किसमें भला अब शक्ति के प्रतिशोध की।"[5]

सही अर्थों में द्रौपदी 21वीं शती की विद्रोहिणी नारी की प्रतिशोध–भावना को भी वाणी देती है। वह अपनी क्षमता और शक्ति को पहचान कर निर्भीक स्वर में घोषणा करती है कि वह मात्र खरीद–फरोख्त की वस्तु या कोई उपकरण नहीं है–

"आर्या भार्या नहीं उपकरण,
वह न कंचन म्लेच्छा!
आर्या नहीं पावक–तनया
मूर्तिमती देवेच्छा।।"[7]

अपमान की त्रासदी को झेलने के बाद वह पापियों के खून से स्नान करने की कठोर प्रतिज्ञा लेती है। द्रौपदी को नारी के अपमान का प्रतिकार चाहिए। जब तक पीड़ित नारी का अपमान करने वाले जीवित रहेंगे, तब तक शांति व धर्म की बात बेमानी हैं। वर्षों से प्रतिशोध की अग्नि में जल रही द्रौपदी ने न जाने कितने योद्धाओं को अपने प्रतिशोध की अग्नि में जला दिया।

"कठिन थी उस दिव्यजन्मा शक्ति की अवहेलना,
कठिन था नभ के लिए भी तेज उसका झेलना,
खेलकर यज्ञाग्नि से सब मर मिटे क्षत्रिय सुभट
खेल पावन–प्रवंचन का भूल कर मत खेलना।"[8]

प्रतिशोध की जो अग्नि द्रौपदी ने पांडवों के हृदय में जलाई थी, समूचा कौरव वंश उसमें जल कर भस्म हो गया, लेकिन प्रतिशोध की इस अग्नि में द्रौपदी को भी अपने पाँचों पुत्रों व भाई की आहुति देनी पड़ी। यह कटु सत्य है कि नर की विजय का मूल्य नारी सदैव चुकाती आई है। पृथा ने अपने वैद्य पुत्रों के लिए अवैध पुत्र कर्ण का त्याग किया। सुभद्रा ने अपने प्रिय पुत्र अभिमन्यु को केवल धर्म और प्रतिज्ञा की रक्षा हेतु युद्ध की अग्नि में झोंक दिया। गांधारी, पृथा, सुभद्रा– कुरुवंश की प्रत्येक नारी ने अपने–अपने पुत्रों का बलिदान दिया–

"सुबला, द्रुपदा, पृथा, सुभद्रा,
सबने भेंट चढ़ाई,
रणचंडी से तब जेता ने
विजय–प्रसादी पाई!
नर की हार–जीत का जग में
मूल्य चुकाती नारी!
बात मर्म की धर्मराज को
आज समझ में आई।"[10]

निष्कर्षतः कवि के शब्दों में कह सकते हैं कि 'द्रौपदी उस चिरन्तन पर नूतन नारी की प्रतीक है जो कृत्या भी है, मृत्यु भी है, उर्वशी है, जननी भी है, जाया है, कल्याणकारिणी और तारिणी भी है। मानवता के विकास का इतिहास नारी की वेदना और आँसुओं के मोतियों से लिखा गया है। भारत की नारी इतिहास के उस प्रभात काल से ही अपने त्याग और बलिदान से पुरुष को उद्योग, सफलता, श्री और समृद्धि की ओर प्रेरित कर अपनी महिमा को मंडित करती आई है।"[9]

साहित्यावलोकन

कृष्ण–कथा भारतीय समाज में श्रद्धा और प्रेरणा का विषय रही है। अनेक रचनाकारों ने अनेक कोणों और सन्दर्भों में इसे रूपायित किया है। कृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन, कुंती और इन सबसे बढ़कर द्रौपदी का चरित्र, उसके जीवन से जुड़ी घटनाएँ हमें अनायास अपनी ओर आकर्षित करती हैं, क्योंकि उसके चरित्र में युग–युग के संस्कारों से आबद्ध शोषित नारी की मनोव्यथा अंकित हुई है।

अनेक रचनाकारों ने द्रौपदी के चरित्र को केन्द्र में रखकर साहित्य रचा है, जिस पर विपुल शोध–कार्य हुआ है। ऐसा भी सम्भव है कि द्रौपदी के चरित्र को विभिन्न पहलुओं से व्याख्यायित करने के प्रयास किए गए हों, फिर भी प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण, उसकी सोच का दायरा, चरित्र–विशेष से जुड़ी उसकी भावनाएँ भिन्न होती है। मुझे पौराणिक पात्र द्रौपदी में आधुनिक नारी की चेतना, जागरूकता, आक्रोश व विद्रोह की प्रतीति होती है। उसका विद्रोह आधुनिक नारी की चेतना से सम्बद्ध होकर जीवन को नई अर्थवत्ता एवं मूल्य प्रदान करता प्रतीत होता है और इसी दृष्टिकोण से मैंने नरेन्द्र शर्मा कृत 'द्रौपदी' का अध्ययन किया है। मेरा शोध आलेख इसी दिशा में मेरा एक छोटा सा प्रयास है।

निष्कर्ष

वस्तुतः द्रौपदी आधुनिक जागरूक नारी का साक्षात् प्रतिरूप है। अपमान की व्यथा एवं प्रतिशोध की प्रबल भावना द्रौपदी के जीवन एवं चरित्र के दो प्रेरक तत्व हैं। यही अर्थों में द्रौपदी नर की ऐसी शक्ति की प्रतीक है जो उसके कल्याण के लिए दुख सहती आई है। वह क्रान्ति की ज्वाला है। शकुनि को अग्निकन्या द्रौपदी ज्वाला–सी दिखाई देती है जिसके चरण–चिह्नों का अनुसरण महाकाल भी करते हैं। यदि आज के सन्दर्भ में बात करें, तो पाएँगे कि द्रौपदी की भाँति आज भी नारी

अपने नारीत्व के अपमान का प्रतिकार करने हेतु संघर्षशील है। आज भी अपनों के हाथों ही वह अपमानित हो रही है, बाजार में बिक रही है। उसकी खामोशी टूटती जा रही है। उसके स्वर में द्रौपदी का स्वर सुनाई दे रहा है।

अंत टिप्पणी

1. *नरेन्द्र शर्मा, द्रौपदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960*
2. *चण्डिका प्रसाद जोशी, हिन्दी उपन्यास : समाजशास्त्रीय अध्ययन, अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, 1962, पृ0 112*
3. *नरेन्द्र शर्मा, द्रौपदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1960, भूमिका, पृ0 15–16*
4. *वही, पृ0 13*
5. *वही, पृ0 51*
6. *वही, पृ0 46*
7. *वही, पृ0 67*
8. *वही, पृ0 48*
9. *वही, पृ0 128*
10. *वही, पृ0 69*